

अथ सूचा पत्र

जन्माष्टमी पाना १ मे

वष्टीपूजन पां. १० में

भादोवद ११ पां. १४ में

भादोसुद १ पां. १५ में

भादोसुद ५ पां. १५ में

भादोसुद ८ पां. १६ में

भादोसुद १०, ११, १२ दानरुकादशी पां. १६ में

भादोसुद १२ वामनजयन्ती पां. १६ में

प्रास्वनवद १ पां. २१ में

प्रास्वनवद ५ श्रीहरिरामजीको ३० पां. २१ में

प्रास्वनवद १२ पां. २१ में

प्रास्वनवद १३ पां. २१ में

प्रास्वनसुद १ पां. २२ में

प्रास्वनसुद ४ पां. २३ में

प्रास्वनसुद १० पां. २४ में

प्रास्वनसुद १५ शरद पां. २६ में

कार्तिकवद १३ धनतेरस पां. २६

रूपचोदस १४ पां. २६ में

दिवासी पाना ३० में

पन्नकूट पां. ३१ में

भाईदूज पां. ३४ में

गोपाष्टमी पां. ३५ में

प्रक्षयनवमी पां. ३५ में

प्रबोधनी पां. ३६ में

कार्तिकसुद १४ पां. ४२ में

श्रीगोविंदरामजीको उत्सव पां. ४२ में

श्रीगोकुलनाथजीको महाउत्सव पां. ४६ में

मगसरसुद १५ छप्पनभोग पां. ४९ में

पौषवद ६ श्रीगुसांईजीको उत्सव पां. ४९ में

भागोका उत्सव पां. ५० में

मकर संक्रान्ति पां. ५१ में

वसंत पंचमी पां. ५३ में

हेरिउंगरो पां. ५६ में

प्रोनाथजीको पाठोत्सव पां. ५७ में

कुजराकादशी पां. ५८ में

होली पां. ५८ में

डोलोत्सव पां. ६० में

दुतीया पाट पां. ६३ में

नयोसंवत्सर पां. ६३ में

रामनोमी पां. ६४ में

प्रोमहाप्रभुजीको उत्सव पां. ६६ में

अक्षय तृतीया पां. ६७ में

नृसिंह चतुर्दशी पां. ७० में

जेष्ठसुद १० पां. ७३ में

स्नानयात्रा पां. ७४ में

रथयात्रा पां. ७६ में

कशमलछट पां. ७८ में

बेगनदशमी पां. ८० में

असाढी प्रनम पां. ८० में

आवरावद १ हिजोला पां. ८० में

आवरावद ३० पां. ८२ में

ठकुरानी नोज पां. ८३ में

पवित्रा ११ राकादशी पां. ८४ में

रक्षावधन पां. ८६ में

Mota Mandir

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 1

www.valjabbharya-gahara.org

www.valabbharyaakrupa.org

(Pushitigya Research Portal)

Shri Tatiji Maharaj Ki Pustak

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj

श्रीकृष्णाय नमः।

अथ श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवाविधि लिख्यते ॥

॥ भाद्रपद कृष्ण ८ ॥

प्रथम श्रीजन्माष्टमीके दिन शंखनाद होय श्री महाप्रभुजी जागे
कोरी वटा नई सुपती बिछे केशरी ओटनी ओढे फुलल नही समर्पे
श्रीगुरुजी जागे केशरी ओटनी बिना झावरकी ओढे मंगल भोग
सेवके लज्जुवाकी बड़े बालभोग मठाई माखन वृण सधाना दू-
धको कयोरा तामे सोनेकी कयेरी २ दहीकी डवेरीया जमुना-
जलको झारी १ भरी जाय नौमीकुं आखे दिन जमुना जलकी
झारी भरी जाय सेवा होइ तिवारीमे सोहनी मंदिर वस्त्र होइ
पंखा चढे द्वारसुं लगमां पाट रहै शय्या मंदिरकी ओर पंचामृ-
त को साज रहै पाटके आगे सूकी हरदीको चौक पूरे स्नानकी पसात
विधियों स्नानको पीटा धरे पट्टा ऊपर कंकूको अष्टदल माछे ताके
ऊपर लाल दरियाईको चौपड ता वस्त्र विछावे भोग सेरे जाच-
मन मुख वस्त्र पीडा २ धरे ओटनी संभारके दरसन खोलें मंगल
आरती श्रीकी होइ होइ भीतरिया चौरसा कोटे राखे सुंगार बडे
होय पछापै श्रीगुरुजीकुं पधारवे टेरा खोलें दरसन खोलें दंड
न करे झालर घंघ शंखनाद करें श्रीगुरुजीकुं तिलक करें
क्षत चोटें चरणारविंदमें तुलसी समर्पे पंचामृत शंख में तुल-
सी समर्पे आचमनके भावसुं जेवने कानके हात लगायके गंगा विष्णु
हरी कहके प्राणायाम करें हातमें जल अक्षत लेके संकल्प कर-
नो ॐ विष्णुः ३ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराख्या प्रव-
र्तमान स्याद्य ब्रम्हणे द्वितीयपारर्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत
मन्वन्तरे कलियुगे प्रथमचरणे क्षत्रवर्षे भरतवर्षे भरतखण्डे
अस्मिन्वर्तमान व्यावहारिक यथा नाम्ने संवत्सरे दक्षिणायने कवी-
कौ भाद्रपद मासे कृष्णपक्ष अष्टम्या शुभवासरे शुभनक्षत्रे शुभ
शुभकरणे एवं गुण विशेषण विशिष्टया शुभतिथौ भगवतः
स्वोत्तमस्य प्रादुर्भावोत्सवं कर्तुं तदङ्गत्वेन पंचामृत स्नानम

कारयिष्ये १ प्रथम दूधसुं पुनः दहीसुं घृतसुं कुरासुं मधुसुं
 तापीछें ४ शंख दूधसुं तापीछें २ शंख शीतल जलसुं तापीछें एक
 लोय स्नानके जलसुं स्नान करा वेंटेरा खेनें ता पाछें गादी पै पधराय
 के अंगवस्त्र करे ता पीछें दूसरी परातनें अभ्यङ्ग होय प्रथम फुल्ल
 सुं पुनः आंवलासुं तापीछें एक लोय जलसुं स्नान करावे ता पीछें
 उवट नासुं ता पीछें बंदनसुं ता पीछें ४ लोय स्नानके जलसुं स्नान
 करावे ता पीछें एक लोय श्रीनमुना जलसुं स्नान होइ ता पीछें
 १ लोय गुलाब जलसुं स्नान कराय अंगवस्त्र होय स्वच्छ सुंदर
 अवर समर्पि केशरी भांत कार वागा पहरावें प्राचीन कलमदान
 क्षुद्र घंटिका सोने की घंटिका जे हरि नूपुर जोड़ी पहंची कंबभरण
 लड मोती की कुलह केशरी तिलक अलका वही लाल कुलह को पेच
 पंजाको गोदी को फूल हरयो तापर लाल फूल लाल जोड़ी तिहरी धों
 सावकाश होइ तो हीरा माणिक पंजा की वीका सीस फूल के ठिकाने
 अर्धचंद्र हीरा को हरी त्रिवल लाल त्रिवल गठी लड मोती की क-
 लंगी तुरी कमल पत्र केशर कस्तूरी को करे फोदना कडे धरेहत
 सांकला लाल मुद्रिका हीरा की होइ फूल हीरा के जेवने श्रीहस्त
 में धरे श्रीकंठ में हांस हीरा को ता ऊपर कौस्तुभ के ठिकाने
 छोटे कठला धरे कठला में बीच में हरी १ मणी आस पास लाल
 २ मणी आस पास चार चार मोती कठला सू नीचें लाल त्रिवल
 ताके नीचें हीरा को ताइत ताके नीचें चौकी लाल ताके नीचें पदक
 लाल ता पीछें फोदना के नीचें मैंग की गोली २ धरे कुंडल मकरा
 कृति वे सारि लाल जोड़ी की माला हरी मणी के फोदना की माला
 मोतिन की बीच में ताइत फांसा की श्री गोवर्धन जी सावकारी २
 श्री गुसांई जी की खेणी दास जी की ३ माधो दास जी की ४ हीरा के ताइ
 त की ५ हरे ताइत की ६ जालिम सिंह जी कारी एक एक हारि माण
 एक एक मोती की ता पाछें विना फांसा की २ माला हीरा के ताइत
 ३ करिष्ये। २ श्री गुसांई जी के दास मशह

धरें ता पाछें श्रीगुसाईजीकी माला गादी पै स्थमन्तक मणीकी ता
 पाछें हीराकी दुगदुगीकी श्रीगुसाईजीकी ता पाछें हार छेले श्रीगुसां-
 ईजीकी हीराकी ता पाछें १ माला ता पीछें हार हीराकी ता पाछें १ माला
 ता पाछें हीराकी हार ता पीछें १ माला ता पीछें हार हीराकी ता पाछें
 १ माला ता पीछें श्रीगुसाईजीकी चंनको हार ता पीछें श्रीगुसाईजीकी
 हार माणिक्यकी ता पीछें १ माला प्रदीप चोरीकी देहावारी ता पीछें
 सावकाश होइ तो १ माला और धरें कलीकी वरुभी जुहीकी चंद्र-
 हार सोनेकी धरें इक हरो शृंगार होइ चुके ता पीछें कमसुं गादी
 ऊपर लीलवाकी माला हरी माला श्वेत माला लाल माला चंपकलीकी
 हार हरे कठला लाल कठला कखूरीकी माला गादीकी हमेल २
 धरें गुंजा धरें फोंदनाकी हमेल २ धरें पांच चंद्रिकाको सादा
 जोड़ धरें भातिवार रुपहरी झालरकी ओढनी ओढें हीराकी
 गीणु धरें नील कमल २ सोनेके धरें एक चूसनी सोनेकी २ चूसनी
 मोतीकी अंजन आजें श्रीकंठमें हंसली सोनेकी कुंडलसुं लग-
 मा धरें चोली धरें शृंगार भोगमें सेवके लड्डुवा कयेरी मखनकी
 बुराकी सधानाकी दहीको कयेरा चमचा टकना उगवें दिखवें नये
 ना

ठाकुरजीको शृंगार होतेमें डोल ति वारी में छोटे ठाकुरजीकुं
 शाहि ग्रामजीकुं पंचा मृतस्नान करावें तिलक करके पंचामृतस्ना-
 न पीछें अभ्यंगस्नान अंग वस्त्र शृंगार होई कमल पत्र होय
 श्रीमहा प्रभुजीकुं अभ्यंग करावें फुलेल चोवा अतर तीनो मिखाय-
 के समर्थ आभरण गुंजा पहरावें केशरी ओढनी भातिवार उद्योवें
 निज मंदिरमें हरदीको चौक पूरें देहरी मांडें ता पीछें पिछाई
 सिंहासन खंड खंडके खिलेना मांडें काम और पड़गी पै काचके
 खिलेना की तबकड़ी जेवनी और पड़गीपै तिलककी धार सामग्रीकी
 उत्सवकी सामग्री बाल भोगकी जग दोइ २ धरें जाय पंजीरी नहीं नि-
 यको शृंगार भोग भोग मंदिरमें धरे
 श्रीठाकुरजीकुं सिंहासन पै पधारवें श्रीबालकृष्णजीको सिंहासन
 नी

श्रीमहाप्रभुजीकूं पधरावें निज मंदिरमें माला १ कमलकी १ फूलनकी यह
 रावें दरसन खुलें वही आरसी दिखावें झालर घंघ शंखनाद होइ
 तिरुक् होइ श्रीगुरुजीके अक्षत जेवनी ओर तब कडीमें बीडा ४ धरें
 जेवनी और दूसरी तब कडीमें २ नारियलमें कंकुकी २ लकीर करके
 रूपैया २ धरें श्रीबालकृष्णजीकूं श्रीमदनमोहनजीकूं श्रीशांतिग्राम-
 जीकूं तिरुक् अक्षत होय मुठिया वारके चुनके दीवलकी आरती
 करें रूपैया २ नाछावर करे बहुवेटी भेट करे पेडा होइ किवाड
 फेरें गोपीबल्लभ भोग आवे आरवी पाटिया २ छोके शाक पाटये
 अनसखडी सामग्रीकी धार तिरुक्को नित्य की थारी सुंगारभोगकी
 गाढे दूधको डवरा मैदाकी पूरी खरखरी कयेरी लोनकी नीबूकी और
 १ कयेरीमें तिख गुड दूध मिलायके धरें घृतकी वरनी मुरब्बाकी क-
 टोरी करोंदाको बिलसाख मीठे शाक पेयको छोके शाक ४ भुजे
 ना २ वा ४ गोपीबल्लभमें तथा राजभोगमें रायता नही आरोगे
 जन्माष्टमीकूं तथा वैकैतके जन्म दिनकूं रायता नही आरोगे
 जमुना जलकी झारी २ भरे ग्वालको नियम नहीं होय वा न होय
 गोपीबल्लभके बीडा २ डवरा सारे पलना झुलें बीडा २ कयेरी
 मिश्रीकी डेलीकी वदामकी मारन मिश्रीकी धरनी फीकी सेव सर
 झराकी वरफीकी डवरीया गोलीकी कयेरी १ जमुना जलको सागे
 खिलोनाकी तबकडी पलना झुल चुके राजभोग आरोगे थाब
 ने आगेकी डवरीया मीठे शाककी घृतके कयेरा धारमें जलवे
 प्याला छडी यर दारकी डवरीया मूंग लीन कूडा रोटी लीयी वही
 शाक २ पापड तिरुक्की देवरी कचरियानकी थारी मिरच वडी शा
 कभाजी भुजे ना कंदके सरखडीमें अनसखडीमें पलनाको भोग
 राजभोगमें आइ जाय दही शिरवरन कयेरी सधानाकी नीबूकी
 लोनकी गोपाल बल्लभमें फनीकी धार उत्सवको सधाना दूधके
 हांडी मलडा चालनीकी कयेरी मिरचकी वूराकी फदली फलादि
 खीर चोखाकी नित्य नै दूनी मग बडाकी छछकी चपटीया चुनवी
 पूरी करोंदाको बिलसाख पडा पै या कयेरी मारनकी वूराकी

बाकी श्री बालकृष्णजी के सरवडी की थार न्यारी आवें शकरकंद
वेगन नहीं श्री जमुना जल की झारी श्री गुरजी की २ श्री नाथजी की
१ श्री बालकृष्णजी की १ श्री महा प्रभुजी की १ तुलसी शंखोदक धूप दीप
पेड़ा होइ किवाड लगे

गोपी वंदन भोग सों तिलक की माला कडी होइ सो माला तिलक के
बीज २ सिंहासन पे जेवनी ओर धरें बीज माला भेट के नारियल
रूपैया नोमो के दिन सध्या आरती पीछे उठे समय भये भोग सों
आचमन बीज मुख वल निज मंदिर मे सिंहासन पे विराजें जडाऊ
वंग में बीज जमुना जल की झारी १ झारी श्री बालकृष्णजी की श्री महा
प्रभुजी की जडाऊ कुंजा आव खेरा सी सी पूर की माला पहरें श्री ग-
जुरजी श्री बालकृष्णजी श्री शालिग्रामजी श्री महा प्रभुजी के गंद चौ
गान सोने के वेत्र जडाऊ चौपड कला बत्तू के काम को पट खंड पै
सोने रूपे के खिलेना तव कडी पडगी पे काच की तव कडी पाट चो-
की सिंहासन के लगाये के त्रिधी २ धरें गंद चौगान धरें बड़ी आ-
रसी दिखावें राज भोग आरती मोती की थारी सोने के दीप लाकी
होइ आरसी दिखावें माला बडी करे श्री हस्त में कडी होइ सो
बडी करे माला छेये जेवनी ओर तव कडी में धरें बीज माला
वाम ओर धरें पेड़ा नित्य दोऊ ओर लगे जन्माष्टमी के दिन
शय्या की ओर पेड़ा लगे पलना मजे तासूं पलना नहीं धरें तासूं
पलना की ओर पेड़ा नहीं लगे शय्या मंदिर मे माला बीज झारी पं-
खा की त्रिघोड़ी जमुना जल की वंग में सेव के लडुवा कयोरो मारव की
वुरा की सधाना की शय्या के पेड़ा पैया लगे सांकड़ करवा कर की
नहीं मूठ में केशरी वगा सुधन तनियां पटका पाग धरें टोकरी मे
साडी के सरी सादा चुन के धरें लाठ अतरुस छपा की चोली लैल
की मखां पको लेंगा मूठ के टकना बट वंदी के

अनक सर होय ताल मंगल कर साइ के शंख नाद पाव कडी दिन ते
होय झारी जमुना जल की भरे श्री गुरजी की १ श्री बालकृष्णजी की १
श्री महा प्रभुजी की १ माला बीज अनो सर के उठे तिलक के रहे आवें

उत्थापन भोग आवें खोवा मलाई मिश्री पना मिश्री की डेही की बदामकी
क्येरी १ क्येरी में बदाम मिश्री की कनी मिला लोन मिरच बुरा बदलीफ.
लादिक भीजी चना की दार अज मान सुधा पीके सेव इस शरा की च-
हनी सबत हो की तर मेवा

उत्थापन भोग सरे जुंजा आवे वरु जमना नाल के भरे आचमन
मुख वरु वीडा वंय में ४ माला श्री गुरुजी के पहारवे श्री हस्त में
कली धरे पाट चौकी लगावे गंद चौगान त्रिष्टी धरे दर्शन खुले
बधाई २ शरा भर संध्या भोग धरे सेव के लडुवा सधाना की
क्येरी कली बडी करे संध्या भोग सरे आचमन मुख वरु
वीडा २ धरे संध्या आरती होय वेत सिंहासन पे रह्यो आवे शं-
गार बडो नही होय ग्वाल आरोगे उवरा सरे आचमन मुख वरु
वीडा शयन भोग आरोगे भात छडि यल दार रता लूको शाक वडा की
छाछ जल की क्येरी पाण्ड ४ सधाना लोन की क्येरी पूरी छोंक्यो
शाक समय होय दूसरे आवें भोग सरे आचमन मुख वरु वीडा
माला सब स्वरूप पहरे खंड पाट चौकी लगे त्रिष्टी धरे गंद चौगान
चौपड मडे शयन आती होय बधाई गावे अगरण के दरसन खुले
शयन भोग के समय में पलना शंगारे साजे नई सुपेती दुहरी चादर
डोरिया की वाल शत गिरदा सुज नी नहीं पलना में तीन सुंडिया धुरे
पीतांबर ३ विछाय के क्येरी साजे गुलाब पाक की सखेली की रेवडी की
उंडान की तिन गुनी की सावनी की तिल की रोटी की पगे बदाम की
पगे पिस्ता की पगे इलाइची दाना की १० मिगई दस दस पैसा भर
सब आवें मारवन की मिश्री की मिश्री की डेही की बदाम की दाख की छ-
हारा की मेवा खिचडी की गिरी की ८ रस खोरा की गोली १ खोवा की
गोली २ केशरी तथा श्वेत मलाई की क्येरी गुंडिया चैत तथा के-
शरी.

पंजीरी की क्येरी में गोली पलना में महल मेवा की क्येरी तापीछे
दूध घर की क्येरी तापीछे रस खोरा की पंजीरी की तापीछे मिगई
की मावे जितनी पलना ते वचे सो महा भोग में आवें. थारी में सज

शयनभोग सरें साज सब मछे शय्याके चोरसा उठें झारी बीडा
बंदा पेड़ा लगे सिंहासनपै भोगके समयकी जन्म समयकी माला र
हें झारी २ तामें सिंहासनपै कुंजा आवरेरा झारी श्रीबालकृष्ण
जीकी झारी श्रीमहा प्रभुजीकी झारी झारी २ शय्याकी दुपहरके
अनोसर वत्सव साज मछे

अर्धरात्र के समय होइ पाद चौकी सरकावें त्रिछी उठें भीड की
तीनीयां सरकें पेड़ा उठे शय्याको साज यथास्थित रह्यो आवे ति
वारीको टेरा खेचें निजमंदिरमें परात स्नानको पद्म पंचामृतके
कयोरा चंदनकी कयोरी कंकु अक्षत तुलसी की कयोरी तब कड़ी
शंख पडगी पैं सोनेकी कयोरी खंडपे पीतांबर २ धर राखें गोरव
लामें मालाको बंड्या अरगजाकी वरनी धर राखें तीन लोय एक
लोय संकल्पके जलको एक शीतल जलको एक स्नानके जलको
निजमंदिरको टेरा खेचें नगारखाना कीतीन बेला चाली बंद तिवा
रीमें बीचकी चौकी पैं घंघ मधराय कें जन्म प्रकरणके श्लोक

अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः। यर्ह्येवा जनजन्म क्षी
शांतक्षी ग्रहतरकम् ॥१॥ दिशः प्रसेदु गीगनं निर्मलोडगणेदयम्।
महीमङ्गल भूयिष्ठा पुरग्रामव्रजाकरा ॥२॥ नद्यः प्रसन्नुल्लिख
द्वाद जलरुहश्रियः। द्विजालिकुल संनादस्तवका वनराजयः ॥३॥
ववौ वायुः सुखस्पर्शीः पुण्यगन्धवहः शुचिः। अग्नयश्च द्विजातीनां
शान्तास्तत्र समिन्धत ॥४॥ मनोऽस्या सन्प्रसन्नानि साधूनामसुर
द्रुहाम्। जायमानेऽजने तस्मिन्नेदु दुन्दुभयो दिवि ॥५॥ जगुः
केन्तरगन्धर्वस्तुष्टुबुः सिद्धचारणः। विद्याधराश्च ननृतुरप्स-
ताभिः समं मुदा ॥६॥ मुमुक्षुर्मुनयो देवाः सुमनांसि मुदन्ति-
ताः। मन्दं मन्दं जलधरा जगर्जुरनुसागरम् ॥७॥ निशीथे तम
भूते जायमाने जनार्दने। देवक्या देवह्युपेण्यां विष्णुः सर्वगु-
णशयः। आविरासीद्यथा ब्रह्म्या दिशीन्दुरिव पुष्करलः ॥८॥

साठे ८ श्लोक ३ बार पढ़के ता पाठ घंघनाद कछू कर हरहेक
वेर करें निजमंदिरको टेरा खेचें तिवारीको टेरा खेचें सिंह
रि के द्वार खुले नहीं दसवीस आदमी दरीन करें एक कीर्तनीयां

पधारै गावे झालर घंघ शंख नाद होइ स्नान के पड़ा पै कं
 कू को अष्टदल मांड के दंडवत करे गोदे के गकुरजी कूं पड़ा पै
 पधारै झालर घंघ शंख नाद तिलक अक्षत तुलसी चरणारविंद
 तथा सरस्वती मृत में समर्पे प्राणायाम कर सकल करे पंच-
 मृत कराने दूध सू दही सू घृत सू गुण सू शहद सू ता पाछें
 एक शंख शीतल जल सू ता पाछें शंख पड़ौत पै धर देने श्री
 बालकृष्णजी कूं हाव में लेके चंदन सू स्नान कराने ता पाछें स्नान
 के जल सू स्नान कराने अंग वस्त्र करे श्री गकुरजी की गद्दी
 के पास जेवनी ओर पधारै श्री गकुरजी कूं ओढ़नी के ऊपर पी-
 तांबर उढाय के श्री बालकृष्णजी कूं पीतांबर उढावे श्री गकुर-
 जी कूं तिलक अक्षत तथा चरणारविन्द में तुलसी समर्पे श्री
 बालकृष्णजी कों भी तिलक अक्षत तथा तुलसी समर्पे टोरा खं-
 चे भीड़ सरकावे श्री गकुरजी कूं माला २ श्री बालकृष्णजी कूं
 माला छोटी श्रीमदन मोहनजी कूं माला बड़ी श्री महा प्रभुजी कों
 माला पहराय के अंगजासू श्री गकुरजी कूं श्री बालकृष्णजी कूं
 पिछवाई सिंहासन कूं किंचित् रिवलावे सिंहासन पै सीतल भोग
 ग आवे क्येरी धरें झारी ४ श्री गकुरजी कूं २ श्री बालकृष्णजी कूं
 १ श्री महा प्रभुजी कों १ आचमन शीतल भोग के क्येरी में होइ शी-
 तल भोग सरे मुख वस्त्र होय श्री गकुरजी श्री बालकृष्णजी कूं
 सिंहासन श्री महा प्रभुजी भोग मंदिर में पधारें महा भोग आवे भात
 की थार छडियल दार तीन कुड़ा पांचो भात वडी के शाक २ पापड
 तिल वडी देवरी मिरच फूल कचरिया सब तरह की पाटिया पुरो
 उवरा में आवे वेगन विना शाक भुजेना सब तरह के सरखडी
 अन सरखडी के कंद के शाक भुजेना जल की क्येरी १ मूंग रोटी छेपि
 मज कड़ी नहीं पारपे जेवनी ओर श्री गकुरजी के झारी २ श्री ज-
 मुनाजल की रहे श्री गकुरजी के पास दूध की हांड़ी धरें तामें क्येरी
 धरें पारपे दूध घर की सामग्री सब भोग आवे पेड़ा केरी तथा खेत

5

बर्फी केशरी तथा श्वेत खोवाकी गुंझिया केशरी तथा श्वेत कासोंधी
श्वेत तथा केशरी मलाई खट्टो दही मीये दही माखन मिश्री शिख-
रन रसखोरा के बड़े तुंग १२ कासोंधी श्वेत तथा केशरी १

पलनाकी क्येरी पपोसके वनी होइ सो मिगई स्थरी में आवे
अन सखजीकी सामग्री के दोकरा पुंजीरी १ कुरके गुंझा २ मठ्ठी
३ सेवके लडुवाके ४ छुई बंदीके ५ जलेबीके ६ शकरपाराके ७
मेवा दीके ८ मनोहरके लडुवाके ९ इंदरसाके १० दोऊ तरहकी
फेनीके १२ वावर दोऊ भांतिके १४ चिरोजीके लडुवाके बीजके
लडुवाके १६

सीराकी परात १ शिखरन बड़ी २ खीर चोखाकी ३ संजावकी ४
पेठाको मींगे शाक करोंदाको विलसाय ६ कैरीको सीरा मुरवा
हू है मैदाकी पूरी ८ आदा पाचरी महाभोगसुं जेल पर्यंत शुद्ध (सफा)
बडाकी छाछ रायता ४ कैलाको कुंदीको ककड़ीको कोल्हाको
उत्सवके सधानको कुंड़ा एक नित्यके सधानको कुंड़ा सधाना *
४ हरी पीपरको मिरचेको दारुको छुहाराको कुंडे लीनमें आवे *
लेन मिरच बुरा आदा पाचरी नीबू कदली फलदिक आंवा जंवरस
वालनीके कुंड़ा सब तरहके छेक्यो दही । *

एक जल सनकी चपटिया श्री गुरुजीके चरणारविंदमें तुलसी
समर्पे (तुलसी सब भोग में समर्पे) ।

श्री जन्माष्टमीसुं कार्तिक सुदी १३ तां ई मुरवाकी क्येरी १
गोपीवल्लभमें २ राजभोगमें कुंज एकादशीसुं गुठाको सीरा
अक्षय्य तृतीयासुं कैरीको विलसाय कैरी पका जाय तब आंवको
विलसाय आंवा मिले तो करोंदाको विलसाय करोंदा न मिले
तो दारुको विलसाय जन्माष्टमीसुं मुरवा आरोगे तुलसी सब
भोगमें समर्पे शंखोदक धूप दीप पेड़ा होइ किवाड फिरे

समय होय भोग शेरें आचमन मुख करन बीजे १ आरोगे माता
जन्मसमयकी बड़ी नहीं होय सब स्वरूप पहरे रहे खंडपाट चौकी

गेंद चौंगन त्रैधै धरें शय्यानकी झारी २ श्रीगुरजीकी झारी १
सिंहासन पै ताके आगे अरगजाकी वरनी जन्म समयकी धरी होइ सो
रही आवे एक झारी श्रीबालकृष्णजीकी एक श्रीमहाप्रभुजीकी म-
हाभोग सरे की आती मोतीकी धारी की सनेके दीवलाको उबरे श-
य्याके पेड़ा लगे।

समे होय तब अनोसर होके पलनाके फूलकी बंदन बार फौंदना
बंधे पलनाके पास वाम ओर कूं चढ़ी पै १ झारी जमनाजलकी रहे
सिकोलीमें बीडा २ वरासकी कयोरी छनासूं ठकके धरे एक थार
में छोटे नग सामग्रीके भरके धरे कुरके गुंथा मंठी सेवके लड्डा
बूही शकरपारा मेवाये मनोहरके बीजके चिरोजीके लड्डा पं-
जीकी गोली।

एक थारमें पीके खिलेना दोऊ थार सिकोली रेसमी छनासूं ठ-
कके धरें त्रिधै धरें खिलेनाकी तबकड़ी झुंझुना धरे

महाभोग आय चुके छये पूजा होइ पूजाकी विधि छये पहले
हिरव राखी होय फूलको पल्लवको मुलेगा तापें पीतांबर लल दर्श-
इको का पीरो उठायेके वंसी खड्ड मंथान कुंकुम अक्षतकी थारी
चूनको दीवला मुठिया ४ बीडा १ सिद्ध कर राखें खीचडी चांवर च-
नाकी दारकी छयीके आगे ढेर कर राखिये पडा २ तापर पीरो
वरुण विछाय राखें तापें श्रीनंदरायजीके भावसूं बैठके पूजन करि
प्रथम संकल्प करिये. देशकाल हि भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य
संभावित समस्त निवृत्त्यर्थे सूतिका रक्षार्थे बाछिका पूजनमहं
कारयिष्ये. संकल्प कर बछी पूजा पाछें वेणुखड्ड पूजा घृतकी
धारा ३ वा २ एवाती स्त्रीके पास आरती उतराइये बीडा २ आर-
तीमें धरने भोगमें मंठी ८ बछी पूजा करेके महाभोग सरवना
सिंहासनसूं पेड़ा लगावेनो रात्री बहूत जान पड़े तो अनोसर
करने घडी १ वा २ गुरजीकूं पलनामें पधरावे.

श्रीगुरजीकूं पलनामें पधरायेके छोटे गुरजीकूं पास

कर बीड़ा २ कयेरी जन्माष्टमी वत् एक झारी कर की को कयेरा गेली.
 की कयेरी डवरा धरें राज भोग की सब झारी भरे पलना भोग धरें.
 गोपी वल्लभ भोग सरे डवरा सरे आचमन मुख वस्त्र बीड़ा दोड़ श्रीग.
 कुरजी श्री बालकृष्णजी श्री महा प्रभुजी पलना मंदिरमें पधारें गोपी.
 वल्लभ के बीड़ा पलना के बीड़ा न के पास धर देइ श्रीग कुरजी पलना
 झुल चुके राज भोग आवें भादो वदी ९ सु दिन ८ तांई पलना के गो-
 ली ४ सामग्री की पंजी लि के पीके को वंग खिलोना तथा छोटे ध-
 पडो आरोगे पलना के कयेरी में जन्माष्टमी वत् सखड़ी में भान छ-
 डियल दार मृग तीन कु डारतालु को का अवी को १ पतरो शाक एक
 छोंक्या शाक रोये छीये नुरत की अरोगे पांचो भान कचडिया पाण्ड
 तिल वडी टेवरी मिरच फूल छोंके शाक महा भोग में सुं राखने
 सो राज भोग में आवें आगे की डवारिया मोठे शाक की जल को व्या-
 ला.

अन सखड़ी में गोपाल वल्लभ में खिचड़ी के नग गुंझा मछी लडवा
 सेवके उत्सव को सधाना दही शिखरन खेन नीबू आदा पाचरी
 पलना को भोग खीर मग वडा की छल्ल की चपटिया खीर नित्य ते
 दूनी होय हांडी मछड़ा दूध के निल को सधाना ४ तरह के शाक भु-
 जेना महा भोग में आये हांडी तिनने सब राज भोग में आवें चुन की
 पूरी चालनी कदलें फल दिक नहीं आव आवें तो आव अंबर स
 गोपी वल्लभ में राज भोग में आरोगे.

समे होय राज भोग सरे आचमन मुख वस्त्र बीड़ी आरोगे फूल की
 माला स्वरूप पहरे वंग जुंजा आवरवोरा जडाऊ गेद चौगाने खेने
 के चौपड जडाऊ सब साज जन्माष्टमी को झारी सब भरी जाय सिंह-
 सन की तथा शय्या नकी पाट चौकी आगे ले बिछी धरे आरसी बडी
 देखे राज भोग आरती धारी की होइ आरसी दिखावे माला सब स्-
 रय्यन की बडी करे शय्या न के चौरसा उगवे माला बीड़ा झारी वंग बि-
 छी पंखा की बिघोड़ी पेड़ा दोर ओर के लगावे पलना धरे अने-

सर होंय सोझ कूं अबेरे शंख नाद होंय संध्या उत्थापन भोग मेले
आवें तासूं श्रीगुरुजीकी झारी २ भरी जांय एक श्री बालकृष्णजीकी
एक श्री महाप्रभुजीकी उत्थापन भोग जन्माष्टमी वत् मिश्रीको पना
भीजी दार नहीं आरोगे नौमीसूं संध्या भोगमे खिचड़ीके नग सधा-
नाकी वेशी ।

समें होय भोग सरे आचमन मुख वस्त्र बीज ६ धरे जिनमें २
संध्या भोगके ४ उत्थापनके श्रीगुरुजीकूं माल पहारें पाट
चौकी आगे सरकावें गेंदचौगान त्रिधी धरे वधाई गावें दरसन
खुलें आधे दरसन होई ता मीछे गेंदचौगान त्रिधी उठें पाट
सरकें खंडसूं चौकी लगावें संध्या आरती होय चौकी उठे वेनकी
होइ माल केझ झारी पाटपै धरे श्रीगुरुजीकूं पाटपै पधारेन
पीतांबर ओढनी बडी करे शृंगार बडे होइ श्रीकंठमें चौकी
रहै कुलह रहै कुलहपै हयो ताइत रहै वागा बडे होय
बिना झालरकी ओढनी भांति वार केसरी ओढें श्रीमदनमोहनजी
श्री बालकृष्णजी श्री महाप्रभुजीको शृंगार बडे होय गाल होंय
उबरा सरे शयन भोग जन्माष्टमी वत् आवें सिंहासन पैसूं जन्मकी
माला तिलककी माला उगड़के टीकेतकूं पहारवनी बीडा देने

शयन भोग सरे आचमन मुख वस्त्र बीज ६ धरे माला सब स्वस्व
पनकूं पहारवें शयन आती धारीकी होय माला बडी होय सब स्व-
स्वपनकूं पौढावें बीडा माला झारी वंग त्रिधी पंखा श्री बालकृष्णजीकी
झारी माला श्रीमहाप्रभुजीकी झारी माला ।

ताला मंगल होय शयन समें जन्माष्टमीकूं माला को जोड नहीं धरे
शृंगार बडे न होय तासूं दसमीके दिनमें और मठडीको
नेग आरोगे शृंगार वस्त्र वागा जन्माष्टमीके पहरे सावकाश होय
तो जोडी दुहरी धरे श्रीकंठमें जुगनु वधनखा पदक धरे कुलह
पै पान हीराको धरे श्रीकंठमें हंसली सोनेकी धरे बंगला धरे गान

धरें फोंदना पै गादी पै हमेल कळल जैसी नहीं धरें एकादहार
 माला २ नहीं धरें इच्छ होय तो फोंदना पै ताइतकी हमेल धरें हरी
 १ जाल २ हिराकी ३ नियम नहीं मंगल भोग १ झारी २ बीज गोपी वल्लभ
 भूमें २ झारी गोपी वल्लभ भोग सरें तब १ झारी ग्वाल ग्वाल होत
 पास रहे, एक झारी पलनाके पास रहे गोपी वल्लभ भोग भोग छेजे
 यरदार उवकी की कडी मिरचकी शाक १ छेजे शाक २ पापड
 अनसखडीमें मैदाकी परी २ खरखरी कयेरी नीवु लोन आदा पा-
 चरी मुरवाकी घृतकी वरनी रायता १ छेजे शाक ४ भुजेना १ वा
 २ सुमें भये भोग सरें बीज २ आरोगे ग्वाल होय उवरा आवे भो-
 ग सरें पलना झुलें पलनामें बीज २ मिर्चके दूक - मेवाकी क-
 येरी १ फिरती मोखन मिश्रीकी वरनी पीके को घंघा फिरतो दूध
 घरकी कयेरी गोलीकी कोऊ दिन दूध पूरी छेजे कोऊ दिन व-
 रकीके दूक एक झारी उवरियानमें पेडा बरपी पलना झुल
 चुके राजभोग आरोगे

राजभोगमें आगेकी उवरीया मिरचके शाक की जलको प्याल
 छडीयल दार मुग कडी उवकीकी पापड तिलवडे ठेवरी छेजे शाक
 रोटी लीची अनसखडीमें दही शिरवरन लोन नीवु आदा पाचरी
 दूधको कयेरा खीर मग चुनकी पूरी छेजे शाक भुजेना रायता १
 पलनाको भोग राजभोगमें आय जाय कंदके शाक भुजेना उत्स-
 वको दूसरे दिन तासुं एका दशी कुं कंठके शाक भुजेना फलार होय
 तासुं कंदके शाक भुजेना दसहरासुं रामनोमीकी दसमी तांडे
 आरोगे श्रीनवनीव त्रियाजी कार्तिक वद १० सुं रामनोमीकी
 एकादसी तांडे आरोगे भादों वद १० सुं गोपाल वल्लभ भूमें वृंदीके
 लडुवा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ भादो वद ११ ॥

Mota Mandir

कुं पिछवाई बाल लीलाकी भावस तांडे

एकादशी कुं शृंगार आप करे वरुन जन्माष्टमीके वाक्क नहें धरें

जोड़ी उत्सव की मध्य के फोंदना फोंदना पर प्राचीन हमेल १ धरे
कर्णफूल ४ श्रीमस्तक पर झालर की दोपी अलकावली ताइत लाल
ठाढी लड गादी पर हार २ लाल चंद्रहार गुंजा गोपीवल्लभ में रोणे
घृतपो प्याल दोय जेने शाक दोइ धुजेन मंग की कडी को शाक
मिरच को शाक पकोड़ी की कवेरी में पकोड़ी आरोगे मनोरथसं मारवन
१ बुरा की १ कवेरी आरोगे राज भोग में पकोड़ी की कडी पकोड़ी को मि-
रच को शाक मंग की दार उवरी या में पकोड़ी आरोगे राज भोग में फ-
हार आरोगे सेधा लोन मिरच बुरा चालनी बदली फलनदिक

भादों वद ११ शीसुं भादों सुद ७ तांई प्राचीन हमेल कठला जैसी नि-
त्य धरे हैं नेमसुं भादों वद ११ सुं भादों सुद ११ तांई पलना में मारवन
मिश्री की कवेरी मनोरथसुं आरोगे और भादों वद ११ सुं पलना के
समें वगीचा कर भौरा फिरावें श्रीवामन द्वादशी तांई
भादों वद १२ कुं चूवर की दार आरोगे एकादशी कुं गादी प्राचीन
रहै गादी वस्त्र विछे सिंहासन को साज कोरे वंटा को भांति वार चेट
पलग पोष उठ जाय

भादों सुद १ कुं श्रीराधाजी की बधाई बैठें हरे श्याम वस्त्र नहीं धरे
शृंगार इच्छा होइ सो कर आजसु दसमी तांई मरवमल की पिछ-
वाई वंधें शृंगार अनुसार

भादों सुद ८ ऋषि पंचमी कुं इक दाली पीरी चूड़ों के वस्त्र हरी जोड़ी
गोल पाग लूम की कलंगी सुनहरी हमेल प्राचीन नूपुर धरे

गोपीवल्लभ में तूअर की दार पकोड़ी की कडी राज भोग में हांडी म-
लजा गोपालवल्लभ में मनोहर के लडुवा आरोगे

भादों सुद ६ कुं श्रीविठ्ठल रायजी कडे श्रीदाऊजी के पुत्र तिन को
उत्सव मंगल भोगसुं सांझ के अनोसर के वंटा पर्यंत वंदी जलेवी आ-
रोगे पिछकाई हरी मरवमल की वस्त्र पंचरंगी ल हरी शाके छज्जेदार
पाग हीरा की जोड़ी मध्य के फोंदना हमेल प्राचीन धरे गादी पर हार २
हीरा के चंद्रहार चंद्रिका सादा गुजरी धरे श्रीकंठ में कंठे दुगदुगी
वही हीरा की कर्णफूल ४ गोपीवल्लभ में आरवो पाटिया मीथे शाक उत्स-
व के सुधाना

पलनामें मिश्री की डेली वराम मिगई मेवा नहीं फीकी सेव झर झराकी
 राज भोगमें आगे की डकरीया मीठे शाक की छडिबल दार तीन कुंडा पापड
 तिल वडी देवरी गो पाल वल्लु भमें जले वी की थार उत्सव को संधाना हां
 डी मलडा दध के खीर नित्यसं दुनी वडा की छाछ
 उत्थापन भोगमें वराम मिश्री की डेली मिगई मेवा नहीं फीकी सेव झ-
 र झराकी बालनी सब तराह की

भादों सुद - मी कुं
 वस्त्र कसू मल सुनहरा की जोड़ी पाग छज्जे दार वा गोल लुमकी कलंगी
 वा चंद्रिका धरे गादी वस्त्र नहीं सिंहासन को सुपत साज उतरे मुखमलको
 रहे दूसरे उत्सव को नगार खाना ४ दिन पहले बैठे अष्टमौ कुं जागते के-
 सरी ओढनी विना झार की ओढें

भादों सुद - मी कुं श्री राधाजी को उत्सव

मंगल भोगमें बडे बाल भोग बूंदी के लड्डु वा को आरोंगे मंगल भोग सुं
 सांझ के अनोसर के वंग ताई शंखनाद होइ श्री महा प्रभुजी जागे पलंग-
 पोष कसना उत्सव के कोरा वंग जन्माष्टमी को फुलेल समर्पे आभरण
 गुंजा पहरे केसरी भांति वार ओढनी ओढें श्री गुरजी के कसना झावा
 पलंग पोष उत्सव के मंगला आरती थारी की होइ शृंगार बडे होइ के
 अभ्यंग होइ फुलेल आवला चंदन उवटना नहीं बागा पहरे कुलह
 धरे वस्त्र भांति वार जोड़ी सावकास होइ तो दुहरी धरे जोड़ी आभरण
 शृंगार सबे जन्माष्टमी को शृंगार दुहरो होइ कटिमें क्षुद्र चंद्रिका न-
 हीं पोंदना पर गादी पर हमेल नहीं चूसनी नहीं कमल पत्र होइ सिंह-
 सन पिछवाई जन्माष्टमी के गादी प्राचीन तकिया जडाऊ चंदवा
 टेरा दिवाल गीरी मुठा के टकना वंदन वार जरी के खिंचे पंखा ज-
 री के शृंगार होइ चुके माला पहरे आरसी केरेवं काजर टीकी के वंगमें
 नाहा छडी सेंदुर काजर टीकी हींगल पहरे.

गोपी वल्लु भ भोगमें आखे पाटिया मीठे शाक उत्सव को संधाना
 भोग निज मंदिरमें आवे गोपी वल्लु भ भोग धर के भोग मंदिरमें विराज-
 वे के पाट के नीचे हर दो को चोक पूरे गादी तकिया जडाऊ धर के दू-
 सरे स्वरूप को शृंगार करें हरे की मुख को लहेगा केसरी डोरिया की

साडी लाल अतलस के छापाकी चोली मूग के आभरण क्षुद्र घंटिका च-
 रणारविंद के आभरण अनवट विछिया पग पान श्री हस्त के आभरण
 हत सांकला मुद्रिका श्री कंठ के आभरण यथा स्थान पहरे हार माला मू-
 ठा के होइ सो और दूटे तो श्री गुरुजी के हार माला मिथ्य में सु धरे
 हार करी को जुही को चंद्रहार गुंजा दीकी समे भये गल होइ ज्वरा
 आरोगे पलना सुखें पलनामें भोग जन्माष्टमी वत्
 भोग मंदिर में श्री गुरुजी श्री बालकृष्णजी श्री मदन मोहनजी श्री
 महा प्रभुजी पधारें पाट पर दूसरे स्वरूप के पास अरगजा की वर
 नी सीसी गुलाब जल की आरसी छोटी सोने की झारी श्री जमुनाज-
 ल की सब स्वरूपन की दूसरे स्वरूप सधां फूल की माला पहरा के
 श्री गुरुजी कूं श्री नाथजी कूं दूसरे स्वरूप कूं माला २ श्री बालकृष्ण-
 जी कूं श्री मदन मोहनजी कूं श्री महा प्रभुजी कूं श्री शालिग्रामजी कूं
 सब स्वरूपन कूं माला पहराय चुके ता पीछे आरती की थार प्रगटे
 दंडवत करें श्री स्वामिनीजी पधारें श्री गुरुजी कूं तिलक अक्षत वीड
 २ दूसरे स्वरूप कूं तिलक अक्षत वीड २ नये नारियल २ कंकू-
 की लकीर करके २ रुपैया भेद धरे श्री मदन मोहनजी कूं श्री बाल-
 कृष्णजी कूं श्री शालिग्रामजी कूं तिलक अक्षत मुठिया वारे के चुनके
 दीवला की आरती होइ नौछावर होइ माला सब स्वरूप पहरा चुके
 दंडवत कर झालर घंघ शंख नाद बधाई गावें झांझ परवावज वजे
 नौछावर होइ तहां तांई श्री महा प्रभुजी कूं तिलक नहीं श्री गुरुजी कूं
 अरगजासु माला खिलावें और गुलाल नहीं चोवा अवीर खिलाये के
 तिलक करें ऐसे ही दूसरे स्वरूप कूं खिलाये के तिलक आरती नौछा-
 वर होइ चुके थार सोने श्री गुरुजी की दूसरे स्वरूप की श्री बाल-
 कृष्णजी की श्री मदन मोहनजी की पांचो भात मीठे शाक पाटिया
 छडियल दार तीन कुहा बडी के शाक २ कचरिया नकी थारी पापड
 तिलवडी देवरी मिरच फल छेवें शाक भाजी भुजेना सब तरह के
 कंद के सब कंद वेगन नहीं अनसरवडी में आगे कूं देकरा पंजीरी के
 फेनी स्वेत को फेनी केसरी को शीतल भाग शिखरन वडी को डवरा
 गोपाल बल्लभ में मठडी दूध घर को साज सब मारन मिश्री मलाई
 हांड़ी मलड़ा दूध के पेठा श्वेत दूध पूरी केसरी वर की वासोंधी
 श्वेत केसरी मीठे दही छेवें दही एक कटोरा शिखरन को अघि

कीमें मिठाई की थार चालनी सब तरह की कदली फलदिक मिरच कुरा
और नित्य भोग सब आवे पलन को भोग आवे खोर नित्य सुदुनी राय-
ता २ बड़ी छाछ की चपटिया सैंधा की पूरी विठसाख करे राको राक
भुजेना सब तरह के

दूसरे स्वस्वपको थार मुंग तीन कूड़ा दर पाटिया न्यारे आवे और
भोग सब मेले समय होइ भोगसर पाट नीचे की ओर सरकाइ लेंड
श्री गुरुजी के आचमन मुख वज्र वीजी दूसरे स्वस्वपको आचमन मुख
वज्र वीजा आरोग चुकें आरसी बड़ी दिखोवे श्री गुरुजी सिंहासन-
र पधारें दूसरे स्वस्वपको शृंगार बडो करें छावमें माळा वीजा साड़ी
चोली लहेगा भेटके नारियल रुपैया अरगजा की वली गुलाबजली
सीसी आरसी छोटी शय्या मंदिरमें मूढा के पास चौखट पर धरें अभि-
रन मूढा की पेटीमें धरें राज भोग की माला पहले पहर लेंड सब स्वस्वप
सोई रही आवे फेर नहीं पहर तिलक के वीजा श्री गुरुजी के पास
जेवनी ओर कूं वीजा २ वाम ओर कूं धरें दरसन खुलें आरसी देखें
आरती थार की सोने के दीप लगी होइ श्री गुरुजी की श्रीमदन मोह-
नजी की माला बड़ी नहीं होइ श्री शालिग्रामजी की श्री महा प्रभुजी की मा-
ला बड़ी होइ शय्या पर केशरी चादर ओढ़ें अनोसर होइ वंग ४
डुलखचै को लोंग को जावित्री को जायफल को जन्माष्टमी कूं वा दूसरे
उत्सव कूं पछेटें.

उत्थापन के समय श्री गुरुजी की श्री बालकृष्णजी की श्रीमदन मोहन-
जी की माला बड़ी करे पास धरें संध्या आरती पाछे श्री गुरुजी के
माला वीजा छावमें के माला वीजा उठें वज्र मूढा में धरें उत्थापन भोग
संध्या भोग भेले आवें तासुं इगरी १ श्री गुरुजी की अधकी भरी जाय
समय होइ भोग सरें आचमन मुख वज्र वीजा ६ माला पहरें पाट चौकी
सरकावे गेंद चौगान तिथी धरें गड़ी गढ़िन नावे १ घड़ी तिथी गेंद चौगान
उठें पाट सरके चौकी खडसु लगावे संध्या आरती होइ
शृंगार बडो होइ वागा बडो होइ श्री कठ में चौकी रहै कुलह पर ताड़
त हन्यो रहै ग्वाल होइ डवरा आरोगें शयन भोग आरोगें रताल को
गुलाब छड़ी यल दार कडा की छाछ पापड ४ जल की क्येरी लोन संधा-

(शुद्ध)

ना बड़ी साक शय्यान पर बंगला ठाढ़े होइ जजक वा डक्के दि-
वाल गौरी तिवागैमें शयन भोग सरे साहको जोड पहरे शयन आरती
होइ अनोसर होइ

www.vallabhacharya-agrahara.org

भादों सुद ९ कू

शृंगार पहले दिनको जन्माष्टमीवत् वागा धरे छडीयल दार पकोड़ी
की कड़ी वा डक्कीको कड़ी शाक भोजन दंडको गोपाल वल्लभमें से-
वके लडुवा.

भादों सुद १० कू

तुवर की दार बड़ीकी कड़ी

भादों सुद ११ कू

दान वरुन कसूमल ओढनी वागा नहीं धरे मुकुट लाल प्राचीनजो-
डीलाल प्राचीन कुंडल मकराकृत शृंगार दुहरो ठाढ़े स्वरूपके व-
छने लालको यलके रंगकी चोटी नहीं धरे दान वामन भेले होइ तो
चोटी धरे हमेल फोदना पर प्राचीन धरे पिछवाई दानकी गेंद
चौगान सेजेकी वेग चौपड जहाज गोपी वल्लभमें भातकी थार छडी-
यल दार पकोड़ीकी कड़ी पापड मिरचको साक छैंके साक २ अन-
सखडीमें पाट पर हांडी १ दूधकी दहीकी २ मीठे दहीकी मीठे शा-
क और सब नित्यवत् रोटी नहीं राजभोगमें गोपाल वल्लभमें म-
नोहर के लडुवा मीठे शाक आधो पाटिया और सब नित्यवत्
बड़ीको शाक पापड तिलवही टेवरी दूधको क्येरा दही नहीं. दान
दान वामनजी भेले होइ तो अभ्यंग होइ केशरी ओढनी ओढे शृं-
गार सब दानको ठाढ़े स्वरूप होइ काछनी कसूमल केशरी पिछ-
वाई जन्माष्टमी की संध्या आरती पीछे केशरी कुलह धरे गोपी वल्ल-
भमें आखो पाटिया दानकी हांडी ३ मीठे स्याक गोपाल वल्लभ दोइ
आरोगे मनोहर के लडुवा खेवाके गुंडा वराम मिश्री की उल्लेख सेव
पलनमें उत्सवको संधाना

भादों सुद १२ वामन द्वादशी कू

अभ्यंग होइ शृंगार केशरी कुलह ओढनी हीराकी जोड़ी कुलह
पर पान हीराको तीन चंद्रिकाको जोड सादा शृंगार इक हरो नाल

हरी हार हीराके फोंदना पर प्राचीन हमेल सांझा कुं शृंगार बजे
होइ कुलह रहै गोपी बल्लभमें आखो पाटिया मीमे शकर उत्सवको
संधाना राजभोगमें छडीयल दार पकोडीकी कढ़ी पाण्ड तिलवडी
देवरी वडीके साक २

गोपालबल्लभमें खोजके गुंझा उत्सवमें संधाना मीमे शकर कये.
रीनमें दूधको कयेस नित्यके अनमपडीको शकर भुजेना थारीमें
आवे रायता कयेरीमें छडीयल दार पकोडीकी कढ़ी पाण्ड तिलव-
डी देवरी

राज भोग सरे सब स्वरूपन के माल पहरावे दरसन खुलें श्री
जमुनाजलको झारी १ भरे पंचामृत होइ श्रीबालकृष्णजीके स्नानके
मेडा पर कंकुको अष्टदल मांडके श्रीगुरुजी के दंडवत करें श्री-
बालकृष्णजीके पडा पर पधरावे सातर घंघा शंखनाद तिलक
अक्षत चरणारविंदमें पंचामृत शंखमें तुलसी समपे आचमन
प्राणायाम संकल्प विष्णुरित्यादि युथा नाम्नि संवत्सरे दाक्षिणा-
यने वर्षात्रयतो भारपद शुक्ल १२ शुभ योगे शुभ करणे एवंगुण
विशेषण भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य वामनावतार प्रोद्भू भोवोत्सवं
कर्तुं तदंगत्वेन पञ्चामृत स्नानमहं कारयेव्ये - प्रथम दूधसों
दहीसों घृतसों वूरासों मधुसों शीतल जलसं चंदनसं उष्णजल-
सं अंग वस्त्र कर पीतांबर उढावे श्रीगुरुजीको गादीके पास
जेवनी ओर पधरायके तिलक अक्षत तुलसी श्रीगुरुजीके च-
रणारविंदमें समपे श्रीबालकृष्णजीके चरणारविंदमें तुलसीस-
मपे माला छोटी पहरावे टेरा रेखेन श्रीशालिग्रामजीके पाठपे
पधरावे भोग धरे दही भात नित्यको संधानाकी कयेरी शीतल
भोग दूधकी हांडी मीमे शकर कढ़ी फलादिक सेंधो नोन मिरव
बूरा चालनी सब तरहकी सिंघोडाकी सेब सौरा देर वडी पूडी
कढ़ी साक भुजेना सब तरहके कंदके शकर कंद वेगन नहीं रायता
झारी श्रीजमुनाजलको पास धरे.

भोग सरे आचमन मुखवस्त्र वीडा २ धरे पाट चौकी सरकोवे

श्रीबालकृष्णजीके
श्रीगुरुजीके

त्रयी धरे गेद बौगान धरे आरसी बजे देखें राजभोग आरती होइ माछ
सब स्वरूपनकी बड़ी होइ बालकृष्ण जीकी माला छोटी जन्म समयकी
रहै सो उत्थापनके समय बड़ी होइ

अनोरसकी सिंहासनकी राख्यानकी द्वारा भरे निखर राखन समय
कुलहपे ताइत रहै श्रीकंदमें चौकी दानवामनजी भेले होइ तो दूसरे
दिन शृंगार वस्त्र केशरी कुलह हीराकी जोड़ी शृंगार भारी तीन वं-
द्रिकाकी जोड़ आधो पादिया मीरे शाक पकोड़ीकी कढ़ी हमल धरे
दान एकादशीसुं आश्विन वरी ११ ताई दोइ दिना जडाऊ फिरते मुकु-
टकी शृंगार एकादिना और शृंगार होइ मनोरथसुं हांडी आरोगे
दूधकी कोई दिना मीरे दहीकी दानके १२ दिन ताई चोटी नहीं धरे
मुकुटके शृंगारमें

पिछवाई चंदोवा छोटके आश्विन वरीमें १२ दिन सांझी पहा पै
मड़े और ३० कुं कोट

॥ आश्विन वद १ ॥

एकमसुं मावस ताई राखन समय फूलकी छोटी गेद गारीके पास
धरे

॥ आश्विन वद २ ॥

आश्विन वरी २ कुं श्रीहरिरायजीको उत्सव मुकुट शृंगार हरे
श्याम वस्त्र नहीं

॥ आश्विन वद १२ ॥

आश्विन वद १२ कुं श्रीगोपीनाथजीको उत्सव वस्त्र केशरी का
रसमल जोड़ी लाल का हीराकी शृंगार मुकुटकी का कुलहकी
विशेष करके कुलह धरे हांडी मलखा दूधके तुअरकी दार
पकोड़ीकी कढ़ी

Sansthan

॥ आश्विन वद १३ ॥

आश्विन वद १३ श्रीबालकृष्णजीको उत्सव वस्त्र केशरी श्रीम-
स्तक पर कुलह पांच चद्रिकाकी जोड़ी हथो वा लाल का का
हीराकी हांडी मलखा तुअरकी दार पकोड़ीकी कढ़ी

॥ आश्विन वद १४ ॥

आश्विन वद १४ कुं शयन आरती कोटकी उतरे सिंहासन कोटकी
पिछवाई हांडी की

॥ आश्विन वद ३० ॥

आश्विन वद मावस कु पाग की शृंगार टोपी के शृंगार बंद केशुरी
११ सुं टोपी शुरू अष्टाद मुदी १४ ताई श्रावण सुं बंद भादों वद
११ सुं टोपी के शृंगार शुरू आश्विन वद ३० सुं बंद

॥ आश्विन सुद १ ॥

आश्विन सुद १ कुं पर्वको उत्सव वरन छापाके वागा धरे
खुले बंदको कुलह धरे कुलह पे पंन^{पान} तुरी हीराके पान चंदे
काको जोड जोडी हीराकी शृंगार दुहरो उत्सव के हार माला क
लीको हार वल्लु भी हार जुहीको हार चंद्र हार कस्तूरीकी माला
आरसो बडी देखें गेद को गान सोनेके वेन चौपड जडागादी
हीराकी

गोपीवल्लभमें भातकी थार छज्जेलदार तीन कुं पापड छेके
शाक २ मीगे शाक श्रीगुरुजीकुं अभ्यंग होय श्रीमहाप्रभुजीकुं
आभरण गुंजा पहरें अभ्यंग नहीं पिछवाई छापा चंदुवा छापाके
एकम सुं नौमी ताई छापाके वरन पोंदना धरे गोपीवल्लभमें पा
टिया पापड आरोगे गोपालवल्लभमें मनोहरके लडुवा आरोगे
~~उत्थापनमें चालनी सब तरहकी सन भोगमें~~ आधो पाटिया पापड
तिलवडी टेवरी हांडी मलज दूधके सिक्को अन्न नहीं आरोगे
उत्थापनमें चालनी सब तरहकी राजभोगमें वजकी छाछके ड
बरा दूजसुं दशहराके पहले दिन ताई आगे की उवरीया पाटि
याकी पापड आरोगे जवारा बोवे मूलनक्षत्रमें

॥ आश्विन सुद २ ॥

आश्विन सुदी २ कुं गोपीवल्लभमें तथा राजभोगमें खंडरकी
कडी मिरचको शाक रायता छाछ मीगे कडी कोरी आरोगे शयन

में हू मीची कदी आरोगें गोपाल वल्लभ में श्वेत कावर
आश्वन सुद दूजकें वस्त्र हरे वा पीरे जोड़ी लाल वा होराकी श्रीम-
स्तकपे चोरी वा दुमाल वा पगा (का दिवाका)

www.vallabhacharya-agrahara.org

॥ आश्वन सुद ३ ॥

आश्वन सुद ३ के गोपाल वल्लभ में बुंदीके लडुवा राज भोगमें गो-
पी वल्लभ में वेसनकी सेवकी कदी मिरचको शाक सेवकी रायता छाछ
कोरी सेव

॥ आश्वन सुद ४ ॥

आश्वन सुद चौथकें श्रीदामोदरजी महाराजको उत्सव दुहरो
नेग आरोगें इक हरो नेग श्री विठ्ठलरायजीके उत्सव वत् आरोगें बुंदी
जलेबी छडियल दार तीन कूज पाण्ड आखो पाटिया मोठे शाक
हांडी मलडा २ वडाकी छाछ चपटीया दूसरे नेगमें मनोहरके लडुवाको
बडो बाल भोग आरोगें गोपी वल्लभ में मेवा भात बुंदीकी मीची कदी
आरोगें उत्सवको सधाना चोलाकी गुंझिया पल नामें थपड़ी पल नामें
दाख मेवाकी खिचड़ी पीकी सेव राज भोगमें पकोड़ीकी कदी तुआरकी
दार बुंदीकी छाछ कचरिया नकी थारी तिल वडी देवरी मिरच फल
खीर संजावकी चोरवाकी

उत्थापनमें खोवा मलाई दुहरे पीकेमें सेव थपड़ी चालनी सब तर-
हकी सब समयके तथा अनोसरके झारो माला बीडा दुहरे
चौथकें वस्त्र केरारी डोरियाके गोल पाग लुमकी कलगी हरी जोड़ी
अलक धरे करणपूल २ शृंगार हलको गुंडे स्वरूप वागा पटका गोल
पाग अलकावली

॥ आश्वन सुद ५ ॥

आश्वन सुद ५ के मोहन थार गोपाल वल्लभ में पकोड़ीकी कदी मि-
रचको शाक रायता छाछ कोरी आरोगें गोपी वल्लभ में राज भोगमें

॥ आश्वन सुद ६ ॥

आश्वन सुद छटकें दूध पूजा आरोगें गोपाल वल्लभ में राज भोगमें गो-
पी वल्लभ में वेसनकी टेवी सरकजीमें होइ दही लोन वेसनमें मिलायके करे

तासी की मिर्च को शाक रायता छछ कोरी आरोगें

॥ आश्विन सुद ७ ॥

आश्विन सुद ७ मीकं गोपाल वल्लभ में दही के आरोगें गोपीवल्लभ में
राज भोग में बूंदी की कढ़ी मिर्च को शाक रायता छछ कोरी आरोगें
मीठी कढ़ी बूंदी की रायन में ह आरोगें मूलन क्षत्र होइ ता दिन राजभो
ग सरे पीछे सरस्वतीजी को भोग साजने

॥ आश्विन सुद ८ ॥

आश्विन सुद ८ मीकं गोपाल वल्लभ में दही के मनोहर के लड्डवा आरोगें
गोपीवल्लभ में राज भोग में आठ कूड़ा की कढ़ी मिर्च को शाक रायता
छछ कोरी आरोगें

॥ आश्विन सुद ९ ॥

आश्विन सुद ९ मीकं दशहरा नहीं होय तो गोपाल वल्लभ में रस की
पपची आरोगें गोपीवल्लभ में राज भोग में पुत्र वडा की कढ़ी मिर्च को
शाक छछ कोरी आरोगें पाण्ड पाटिया पर्वसु दशहरा ताई आरो
गें शांति कुसुमल पाग सोमपूल हीरो आजसु माला को ओषो
जोड बंद

॥ आश्विन सुद १० ॥

दशहरा के मंगल भोग में आखो दिन में बड़े बाल भोग सेवके लड्डवा
को आरोगें जरी की ओढनी ओढें वा आत्म सुख श्रीमहाप्रभुजी को अभि
रण गुंजा पहरे श्वेत जरी की ओढनी ओढें आरती थारी की दशह
रासु दिवारी ताई रायन के दर्शन खुले शृंगार अभ्यंग वस्त्र श्वेत
जरी के श्रीमस्त रूपे चौरा छज्जे हार जोडी लाल प्राचीन शृंगार दुह
रो आभरण हार माला सब तरह के उत्सव के नित्य के हार कली को
वल्लभी जुही को चंद्रहार चंद्रका सादा बूहगी एकनगी लाल कर्णफूल
४ गोपीवल्लभ में आखो पाटिया मीठी शाक उत्सव के सधाना-पठ
ना में बदा ममि श्री की डेही सेव

दसमी को दशहरा होइ तो मुरली धरजी को उत्सव भेले होइ
मुरली धरजी के उत्सव को प्रकार बूंदी शकरपारा हाड़ी मलडा

नौमीको दसरा वा होइ तो दसमीकूं आधो पाटिया मीये शाक हांड़ी मलडा बूंदें शकरपारा गोपालवल्लभमें रसकी पपची पक्कीजीकी कटो छडीयलद्वारा पापउ बडीको एक शाक गोपीवल्लभमें भातको थार नौमीको दसरा होइ तो गोपालवल्लभमें खोनाके गुंझा आरोगे उत्सवको सधाना और पहले छिरयो है छडियलद्वारा तीन कूडा पापउ बडीके शाक ३ कचरिया पापकी थारी तिलवडी देवरी मिरत फूल हांड़ी मलडा नहीं केदके शाक भुजेना बडीकी छछकी चपरीया चंदका पिछवाई सिंहासन रुपहरी जरीके सिंहासन कचको गेंदचौगा सोनेके वेन जडाऊ आरसी बडी देखें अनोसर भये पीछे तिवारी खडीकी देहरी माडें चौकमें दसहरा माडें।

साझकें उत्थापन भोग आय चुके पीछे जवाराकूं शंखोदक करें कलंगी पीरे रेरामसुं बांध राखें ४ एक थारीमें जवारा कलंगी बीज २ कंकु अक्षत तुलसीदल एक थारीमें कंकुको अष्टदल करके चूनके दीवला मुठिया सिद्ध कर राखें।

भोग सरे आचमन मरुकरम बीज माला पहरोवें त्रयीपात्र चौकी गेंदचौगान आधे दर्शन होइ चुके पाट सरकावे खंडरहोआ के अष्टदलकी आरती प्रगटें दंडवत करें झालर चंव शंखनाद होइ तिलक करें अक्षत चौंयके चंद्रिका बडी करें श्रीमस्तकपै तुल कलंगीके पीछे जवाराकी कलंगी गंके चरणारविंदमें तुलसी समपै चरणारविंदपै जवारा धरें बीज दोइ धरें श्रीबालकृष्णजीकूं श्रीमदनमोहनजीकूं श्रीशालिग्रामजीकूं श्रीमहाप्रभुजीकूं तिलक करें अक्षत चौंयें जवारा धरें मुठिया वारके आरती उतारे टेरा खेंवें झारी श्रीजमुनाजलकी १ भरें भोग आवें संध्या भोग सेवें लडुका सधानाकी कचेरी माठ १० उत्सवके सधानाकी कचेरी हांड़ी दुधवीमीये शाक गालनी सब तरहकी तुलसी शंखोदक धूप दीप होइ भोग आय चुके दसहराकूं वस्त्र उगवे छोये व कूं अक्षत जवारा धरें।

भोग सरे बीज ४ धरे दोइ उत्सवके दोइ नित्यके खंडसं चौ लंगावे दर्शन खुले संध्या आरती थारी की होइ शृंगार बडीले

चौरापै आभरण अलकावली सिरपेच लड सीस फूल रहे आवे जवार
कलंगी कडी करके दूसरी जवार की कलंगी धरे श्रीकंठ के आभरण
सब रहे वेसर करण फूल २ हत फूल २ श्रीकंठ में माला के ठिकाने
हरे हरे धरे गारा पहरे माला ३ कडी २ लाल २ हरी का दुग-
दुगी पहनी रहें

शयन भोग आइ चूके आत रादोपक चूके माला दो जोड बंदरख-
न के दरसन खले होइ दीवी वन की आगे धरे पौडती समय चौरापै
सीस फूल सिरपेच के ठिकाने रहे एकादशी के शृंगार येही दसमी सु-
रूप चौदस ताई शयन के दर्शन होइ पाग पे का चौरापै दूम तुरी
धरे सीस फूल सिरपेच के ठिकाने धरे पौडती समय वागा बडे होइ
चौरा बडे करके पाग बांधे दशहरा सुं काविके सुही १२ ताई जरी के
वागा वरन धरे दशहरा सुं शीतलाई होइ तो भीतर पौडे सुपेती वंग
शीतकाल को विछै दशहरा सुं गरमी होइ तो सुजनी सीलुकी विछै
शयन के समय मंदिर धुवै साज बाहर ले मुग की ढकना के सीरा के
पुनम की शरद होइ तो एकादशी के शृंगार दशहरा को द्वादशी ते-
रस के शृंगार मुकुट को होइ चौदस के हल के शृंगार होइ
चौदस की शरद होइ तो एकादशी द्वादशी के मुकुट को शृंगार तेरस के
हल को होइ

पुनम के वा चौदस के शरद होइ तो गोपाल वल्लभ में मोहखे ल-
डुको आधो पाटिया छेडियल दार पकोडी की कढी मोवे साक कवे-
रीन में आगे पापड कडी को शाक पिछवाई सिंहासन रास के निज
मंदिर में स्वेत जरी को चंदुवातिवारी में तारान को श्वेत चंदुवा बांधे
वंग चौकनो विछै सुजनी रेसमी श्वेत विछै पहंग पोष श्वेत विछै
महा प्रभुजी आभरण गुंजा पहरे शय्या पर उपरना श्वेत ओढे मु-
दके ढकना चौरसा श्वेत श्रीगुरुजी के अभ्यंग होइ वागा श्वेत ज-
री को ओढनी सुनहरी साबर को ओढनो पे हल दरी को पीता
बर ओढे मुकुट हीरा को जोडी हीरा को शृंगार सब चांदनी को द-
हरो होइ उत्सव के तथा नित्य के हीरा के हार हीरा की दुगदुगी की
माला धरे उत्सव को कली को हार जुही को हार चंपकली को चंद्रहार

सोनेको करचुरीकी माला फोंदना बड़े धरें फोंदनापै हमेल हीराकी चो-
 ये नहीं शरदेक तथा गोपाष्टमीक कमल पत्र होय आरसी बड़ी देखें
 वेणु हीराकी वेन चाण्ड जज्ज पट श्वेत जरीको गंद चोगान रूपके
 शयन भोगमे छडियत हार आरोग्य सुखमे दसन नहीं होइ तिव-
 रीमें सिंहासन पिछवाई श्वेत तिवारीमें चोक्रमें बिछावत विछे चोक्रमें
 सांगामाची रहै तिवारीमें शय्याको सब साज रहे भोग सब आवे
 सिंहासन खंड राज भोगके समय विछे तैस ही विछे पाट चौकी नहीं
 झारी दुहरी गकुरजीकी सिंहासन पर शय्या पास श्वेत झाला चढे
 अरगजाकी करनी हीराकी कुंजा आव खोरा वंज जज्ज एक नयन
 पैको बीडा २ अधकीमें फूल दान पास धरें

उत्सवको भोग श्वेत सामग्री दूध धरकी दूधकी हांडी मल्लज माखन
 मिश्री दूधपुरी पेडा वरकी वासोधी मलाई मींगे दही
 रसखोरा मिश्रीको पना मेवा मिण्डकी थार नित्यको वंज
 अनसखडीकी सामग्री मींगे कचौरी गुजराती खाजा चंद्रकलावों
 री वको मंदर हरी

खीर शिखरन कडी कडाकी छछ छेक्यो दही कचौरी मंग
 दारकी गुंझिया मींगे शाक मैदाकी पूरो फड फडैया बना चमाकी
 दार चालनी सब तरहकी मुरब्बाकी कचौरी रायता १ शाक १
 वा २ भुजेना २ वा चार तर मेवा कदली फलादिक लोग भिरन
 वृग उत्सवको सधाना चंदनी श्रीमुख पर आवे तब थारीकी आरती
 दोइ उतरे एक शयनकी एक उत्सवकी राई नोन नोछावर होय
 शृंगार बडो करके बाहरकी खिडकीकी पाग बांधें श्रीगकुरजीका
 स्वरूप पोटें शितलाई होइ तो खोल ओढ़ें रजाई ओढ़ें रजाई
 पर खोल ओढ़ें सिंहासनके आगे गद्दी तकिया रहें दूसरे चोण्ड
 मांडें आभरण तब कडीमें लपेटके शय्याके नीचे धरें आभरणके क
 लमदान धरें नौ चौकिया आकासी पै गढे स्वरूपकु काछनीये
 त जरीकी लाल जरीकी दूसरे दिना शृंगार मुकुटके दस हरासूं
 मूढके वस्त्र जरीके धरें वरस दिनके नये बडे वस्त्र बागा सुवन
 तनीया पटका पाग रहै आवे अधकी रंगील वस्त्र पहें जरीके धरें

शीत कालमें जरीके तथा रेशमी बड़े धरें कार्तिक वदीमें एकादिना दस-
मीको शृंगार एक दिना धनतेरस को एक दिना एकादशीको एक दिना
खण्डौं दसको एक दिना द्वादशीको एक दिना विनारीको एक दिना
जरीके वस्त्र पीरो दुमाळा एक दिना मुकुट दासको धरें एक दिना
पीरो रिपारा लाल पेच एक दिना लाल रिपारा पीरो पेच आश्विन सुदी
११ सुं लेके कार्तिक वदि १ लाई शृंगार होइ दिन घटे वो कार्तिक
सुदीमें होइ कार्तिक वदि १० सुं नगारखाना बैठे अन्नकूट ताई अन्न-
कूटके शृंगार होइ दसमीसुं गादी तकिया नकी पाट चौकी की श्वेतखो-
ली उतारें गादी वस्त्र श्वेत नहीं मरमलको रहि दसमीसुं शृंगार
वस्त्र श्वेत कारचोवके श्वेत वस्त्र पर सुनहरी किनारीको चौरा वा को-
मल कारचोव होइ तो कारचोवको चौरा छज्जेदार लूमको कलंगी
सुनहरी धरें हरी जोड़ी हांस नहीं श्रीकंठमें कंव भरण ताइत हयो
हरी ताइतकी त्रिवल जुगनु धरें एक हीरा माला दोइ कर्णफूल
दोइ दोइ हस्तफूल गादी पर हरी माला वैणु हरी शृंगार हलके
गोपाल वल्लभमें सेवके लडुवा आरोगे और दसमसुं भाई दूज
ताई पौटली विरियां चौरा रहे सोसफूल सिरपेवके ठिकाने

॥ कार्तिक वद ११ ॥

वै दिन वस्त्र वस्त्र वेंजनी जरीके छज्जेदार चौरा स्यामजन्मावकी
कलंगी धरें हीराकी जोड़ी कंठमें कंये वदी दुगदुगी धरें छोटें पोंद-
ना धरें कर्णफूल चार धरें श्रीहस्तमें रत्नचौक गादी पर एक हार
हीराको और हीराकी दुगदुगीकी माला पै धरें शृंगार हलकेसुं
कछूक भारी गोपाल वल्लभमें सेवके लडुवा आरोगे एकादशीसुं
टाट वंदीके तकिया पाट चौकी की खोली और आज सिंहासन पर रावन-
समय छोटें कावको बंगला धरे द्वादशीकं छातको धरें तेरसक एक
बंगला सिंहासन पर २ चौकी आसपास मांडके बंगला धरे ॥

॥ कार्तिक वद १२ ॥

वै दिन पीरी जरीके वस्त्र छज्जेदार चौरा चंद्रिका कामको जोड़ी
हरी कर्णफूल ४ श्रीहस्तमें हत सांकला रत्न चौकी मध्यके पोंदना

धरें फोदना पै हरी माला गादी पै हरे हार २ हरी माला पै शृंगार
मध्य तांई गोपाल वल्लभ में मेवा लै आरोगे।

Core Mota Mandir Pracheen Kram 1

धन तेर सके दिन शृंगार वरन हरी जरी के छज्जे दार चौरा चांदिका
सादा लाल जोड़ी कृष्ण फूल ४ श्री हस्त में हव साकल मुद्रिका फूल
२ धरें फोदना बडे धरे फोदना पर लाल माला गादी पै हरे हार
लाल माला पै शृंगार भारी सोने के वासन मेकसे चंदना पिछ वाई
हरी जरी के चोपड मीना की गोपी वल्लभ में भात की आर छडियल दार
पकोड़ी की बढे मीये शाक पापड

राज भोग में आधे पारिया मीये शाक पापड वडी को शाक
गोपाल वल्लभ में फेणी आरोगे हांडी मल्ला दूध के संजाव की खीर
चोखा की नहीं

॥ कार्तिक वदि १४ ॥

रूप चौदस में भाई दज तांई जखऊ तकिशा वंदा कुंजा आवरौरा
लंबी गार्हि श्री गुरुजी विराजे प्राचीन गादी पै गेह चौगान सोने के
चोपड के अजखऊ आरती थरी की रूप चौदस के कंदुवा पिछ वाई
सिंहासन सुन हरी पुर कसाई जरी के श्री महा प्रभु जी के श्री गुरुजी
के उवटना सु अभ्यंग होइ आभरण गुंजा धरें वरन सुन हरी पुर
क शाही जरी के छज्जे दार चौरा चांदिका सादा हीरा की जोड़ी फोदना
बडे फोदना की माला की धरे सो मालान के ऊपर हमेल ताइतन की
हरी १ लाल २ हीरा की इच्छ होइ तो धरें गादी पर शृंगार दोहरो
हार माला उत्सव के तथा नित्य के सब धरें जन्माष्टमी वत् फोदना
की गादी की कठल जैसी हमेल एक हू नहीं धरें ताइतन की हमेल छ
रें हरी हीरा की मंगल आरती भये पीछे टेरा खेचें स्नान के कठल
पर श्री गुरुजी के पधरावे तिलक करे अक्षत चोटें तिलक के की
जा पार पैं धरे अक्षत वडे करे अभ्यंग करावे दोहरी श्री बाल
कृष्ण जी के श्री मदन मोहन जी के श्री महा प्रभु जी के रूप चौदस के गोपी
वल्लभ में आखो पाटिया मीये शाक उत्सव को सधाना
राज भोग में मीये शाक छडियल दार तीन कूडा पापड दिख वडी

वरी मिरच फल कचरियानकी थारी

गोपाल वल्लभ में पूजा घृतकी कयेरी वृषकी कयेरी हांजी मल्लज उल्ल
वकी संस्थाना वडाकी छावकी चण्डीया सज्जानकी खीर दूनी चोखा नहीं
पलनामें बदाम मिश्रीकी डेली सेव

उत्थापनमें बदाम मिश्रीकी डेली सेव चालने सब तरहकी
सांझक चोवरपे काचकी हड्डी तामें सिंहासन काचकी तामें उत्थापन
भोग सरे पीछे विराजे गुंजा आवरोरा श्रीजमुना जल के भरे मालू पह
रे भोगके दर्शन खुले समय होय झारो भरे संध्या भोग मण्डो सं-
धाना २ रुपैया २ की सामग्री दूध घरकी आरोगे संध्या आरती पीछे
शृंगार बडो नहीं होइ शयन आरती समय फेर विराजे शयन आरती
होइ नौछावर होइ मंदिरमें पधार शृंगार बडो होइ चौरा सोस
फूल सिरपेचके ठिकाने रहे।

पलनाके वालिस्तकी शय्याके वालिस्तकी धैलीं कस्तूरीकी धैलीं
तीसरे वर्ष पहरे

॥ कार्तिक वद ३० ॥

दीप मालिका संगल भोगमें आखे दिनमें बडो बाल भोग सेवके
लडुवाको आरोगे सिंहासन पिछवाइ चढ़वा मुंदक ठकना रूपही
परुख शाही जरीके साजे श्वेत परुख शाही जरीकी वा फिरती
चोली खुलती लहंगा लाल कीमखापको वा वस्त्रके मेलको वागा
मुधन पेटका चौरा तनीयां श्वेत मुदमें धरने आरती रूप चौरस
तथा दिवारी तथा अन्न कूट तीनों उत्सवक थारीकी होइ भाई दूज
भी आरती थारीकी होइ झारी दिवारीसु भाई दूज ताई श्रीजमुना
जलकी भरो जाय दिवारीक गोपी वल्लभमें तथा राज भोगमें रूपनो
दसवत् सब आरोगे उत्थापनमें दिवारीक गोपाल वल्लभमें दीवला
की थार आरोगे रूप बौदसक दिवारीक अन्न कूटक भाई दूजक
श्रीमहा प्रभुजी आभरण गुंजा पहरे दसमोसु भाई दूज ताई फुल
समेष वार तिथिक बाधकनही दिवारीक श्रीकुरजीक श्रीमहाप्र-
भुजीक उवटना सहित अम्भन होइ वस्त्र श्वेत परुख शाही जरी-
के श्रीमस्तक पर कुलह खासाको वागा सइ जरीके वागामें नया
मुकुट वस्त्र धरे जोडी आभरणको फांदना प्राचीन हमेल सबज-

दिवारीके दिन सेन आरती पहले मंदिरमें होइ ता पीछे श्रीनव-
 नीत प्रियजी त. श्रीनाथजी त. बड़े लालजी सुख पालमें विराजके
 कान जगावके पधारे बीड़ी अरोगते अरोगते पधरावने ओर
 सगरे सख पनवु हटरीमें पधराइ देने कान जगाइके पीछे प-
 धारे सो हटरीमें विराजे पधारे सुख पालके भीतर
 आरती च होइ हटरीमें विराजे हासन खुले बीड़ी आ-
 रोगे फेर हटरीको भोग सजे सीतल भोग हटरीके भोगके संग
 आवे ताकी मिश्री से. १। पीसी तामें जल से. ३॥ सुगंधी इलाइची
 की तो. १। पधरावनी गुलाबजल मिलावने फेर कंकड़े अष्टदल-
 की आरती. होय मुगीया चुनकी वरनी फेर पीछे भीतर सिंजपे
 पधारे फेर माल धरके दूसरी हटरीकी आरती भीतर होइ चुन-
 के दीवलीकी भेट नोछावरे होइ त. राईलोन होइ. सुख पालमें
पधारे ताको
पीछे
 श्री गोवर्द्धन पूजा करवकी विगति. सुख पालमें श्रीगुरुजी
 पधारे ता श्रीगुरुजी पीतांबर एक आधी धरावनों ओढ़नी की सी-
 नाई नही धरावनों दोऊ छेडे भेले करके धरावनों त. वेणके
 त्र पास रहे बीड़ी अरोगते पधारे त आधी बीड़ी अरोगे फेर
 नोनोदिया पे विराजे तहां आधी बीड़ी अरोगावनी फेर बीड़ी
 अरोगे पीछे दूधकी हांड़ी अरोगावनी फेर सुख पालके आछे
 चोरसा टक वाइ लेने फेर दूधकी हांड़ी दो चार मिहट अरोगा-
 इके चरके गाल कुं दे देनी फेर दूसरी बीड़ी आधा अरोगा-
 वनी त. एक गिलेली अरोगावनी फेर गिरराजकी कंदरामें
 पीतांबर विछावनों झालर चंद गिरराजकी पूजा समे वजे
 राख नहीं वजे जब गिरराजकी आरती होइ तब सर्व वजे
 फेर दंडवत करके गिरराजजीकु पधराइके तिहक करने
 अक्षत लगावने तुलसी समर्पनी फेर सवमें तुलसी समर्पनी
 जल दूध दही बंदन कंकू हलदी सवमें मिलावनी फेर यथा-
 मसं स्नान करावने माला धरावनों तुलसी समर्पनी फेर त-

2011 मे 2012 के आगवर्गो व्यां प्रसादी
2012 मे 2013 के आगवर्गो व्यां प्रसादी

हसी गिरराजके ऊपर सब ठिकाने थोरी थोरी समर्पनी-पेर
धूप दीप करनी ओर गिरराजको कुडवासे भोग धरनी तब एक
मडगी के ल्यारी श्रीगुरुनाथलकी हारी भवे धरनी पेर राखोदक
करनी पेर थोरीसी देव रहवे भोग ससवने श्रीगिरराजके आगे
आचमन करवावने पेर मुखवस्त्र करवने पेर रसीन सोलने पेर
र ग्वालन कूं बुलावके थोरी बांधवे कूं देने तिलक करके थापा
देने पीछे गिरराजजी कूं राध्द शीतल जलसु न्हावने चंदन
नहीं समर्पनी पेर न्हावके अंगवस्त्र करके श्रीगुरुजीके
पास धरावने पेर मुखियाजी माला बीज श्रीगिरराजको प्रसादी
उपरना सिंगारीको उवावे पेर सिंगारी सेककट हलुवान कूं संग
लेके श्रीगिरराजकी परभ्रमा चार ४ करे पेर हाथ धोइके
श्रीगुरुजीको पधरावने आधी बीडी रही होइसो अरोगते
पधारे पेर श्रीगुरु विगारीमें पधारके कंवके अष्टदहकी चुनके
दीवादी आरती वा समे करनी पेर मुखिया ४ वारने पेर श्रीगुरु
रजी कूं मंदिरमें पधरावने अन्न कुटको जहां भोग आवे तहां
पधरावने पेर शीतल भोग धरनी एक मुखिया तहां रह्यो आवे
छोयो भयो ओर सब न्हाइवेको चढ़े जांइ पेर न्हावके अन्न-
सखडी सखडी अन्न कुटको भोग सब साजके पेर यथाक्रमसु
शिव सेवा सेन तांईकी पंचनी सब दीक गुरु करके अनेसरे
करा इके बाहिर निकसनो या प्रमाणे पुरानी पुस्तक देखके
करनी ओर श्री गिरराजजीकी पूजा भये पीछे गिरराजजी कूं
स्वच्छ जलसु न्हावने पेर अंगवस्त्र कर श्रीगुरुजीके पास
पधरावने पीतावर ओवावनी तिलक करनी छेयी माला श्रीजीकी
बसे करकी धरनी

2011 मे 2012 के आगवर्गो व्यां प्रसादी
2012 मे 2013 के आगवर्गो व्यां प्रसादी

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 1

कार्तिक वदी ३० को अन्नकूट होय और भाई दोज दोज को होय तो बीचके खाली दिनमें या प्रमाण शृङ्गार होय
 कार्तिक सुदी १ के दिन गुलाबीजरीके वस्त्र, पन्नाके आभरण, मोलचौरा, चन्द्रिका फुराखी सादा, शृङ्गार हलके कर्णफूल २ ठांडे स्वरूपके घेरदार बागो ।

चैत्र वदी १ को डोल होय और फागुन सुदी १४ की होली होय तो पूर्णिमाके दिन नीचे प्रमाण शृङ्गार होय,
 चौकने नैनमुखके वस्त्र, बालकी खिड़कीकी पाग, आभरण मीना तथा सोनेके, बाँधो घेरदार, शृङ्गार हलके, श्रीअङ्गमें कण्ठाभरण, नीचे एक चौकी, तथा माला छोटी, तथा गादी ऊपर हार १ तथा माला चार और गुंजामाला, कपोल ऊपर गुलालके दोनों ओर ठपाना करने दाहिनी नहीं रगनी ।

श्रावण वदी २ के दिन हिडोला विराजे तो अन्नकूट श्रावण वदी १ के दिन या प्रमाण शृङ्गार होय,

धैत वस्त्र, मलमलके तथा बालकी खिड़कीकी पाग, मुफद चन्द्रिका शृङ्गार उष्णकालके हलके, ठांडे स्वरूप छेली परदनी धरे १ के दिन हिडोला विराजे तो यह शृङ्गार आषाढ सुदी १४ के दिन करने ॥

श्री गिरिधरजीने कुंडुम

Sansthan

कुंडुम श्री गोकुलनाथजी

Mota Mandir

प्रथम कुंडुम १५५१, ५५५१, ५५५१ कुंडुम छिड्डी
 ने कुंडुम नया पा लया ५५५१ अनेते आशीरवादमा
 मार ५५५१ लवडी

माष्टमी वत् धरें कमल पत्र होंय चौथे धरें अंजन नहीं वेणु वेनचौ
पड जजाऊ नील कमल सोनेके धरें मोतीको कमल धरे वूसनी नहीं
धरें ॥

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 1

॥ कार्तिक सुद १ ॥

अमावास्यको अन्नकूट होइ तो नौमीसू शृंगार होइ नौमीकू दसमी-
को शृंगार दसमीको गोपालकल्लुभ एकादशीकू द्वादशीको शृंगार
द्वादशीको गोपालकल्लुभ द्वादशीकू दसमीको शृंगार गोपालकल्लुभ
बुदीके लडुवाको हांडी मलडा सजावकी खीर मीठे शाक आथो पा-
हिया छडिबलदार पकोडीकी कढ़ी पापड तिलकडी देवरी मिरच
फल पेनी नहीं आरोगे

धनतेरसकू रूपचौदसको शृंगार होइ अरोगकेको प्रकार रूपचौ-
दसवत् पहले लिखे हे ता प्रकार आरोगे गोपालकल्लुभमें पेनीआ-
रोगे पूवा नहीं अभ्यंग नहीं रूपचौदस तथा दिवाली भेली होइ तो
शृंगार दिवारीको अभ्यंग भेलो होइ अरोगे रूपचौदसवत् गोपाल-
कल्लुभमें आर पूवाकी क्योरी घृत वराकी दिवारीकू गोपालकल्लुभ
दीवलीको आरोगे आगे पूवाकी आर पीछे दीवलीको आर रूपचौदस
दिवारी न्यारे होंय तो दोहे दिन ताई अभ्यंग उवटना सहित होइ
श्रीगुरुजीकू श्रीमहाप्रभुजीकू भी होइ

दिवारीके दिन सांझकू ग्वाल नहीं होइ शृंगार बजे नहीं होय श-
यन आरती होय चोखेलमें श्रीगुरुजी विराजे केन पास धरें
गाय खिलायकेको पीतांबर ओढनीके ऊपर वाम ओर दोहरो करके
धरें छोट गुरुजी पास विराजे वससकी वंछे खीसीमें बीडी ४
परचारग गुसाईके पास रहे तोरा गुसाईनकू भीतरियानकू
वांटे कीर्तनीया समाजसहित आगे चले आवीर गुलालकीचाली
आगेकू मडती जांघ संग चले आर श्रीजमुनाजलकी विष्टीज-
लको लेख छांगीर पंखा मरा बीडी आरोगे पधारि एक बीडी
अरोग चुके हांडी आरोगे गाय खिलावे बीडी आरोग चुके चो-
खेलसुं उतरके नौचो कियामे विराजे दर्शन होइ बीडी २ आरोगे
चुनके दीवलीकी कंकूके अष्टदलकी आरती कर परित्रमा करे श्री-
गुरुजी मंदिरमें पधारें ५ हांडी आरोगे चुके दसमी बीडी आरोगे